

सं० प्र० विं०/एक. ड०./148-86/33257--देवि हरिशंगा के राज्यानन्द को राम है कि मैं प्रारंभी ग्रेनाइट प्रा० विं०, तिरंगा रोड़, करोदाबाद, के अधिकारी श्री राम से, दुव श्रो मानवी राम, मार्गशीर्ष करोदाबाद कामगार पूनियत, 2/7 गोपी कलोनी, पुराना करोदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इकाई विभिन्न विभागों में कोई श्रीगंगाधर विहार है;

और चुंकि हरिधारा के राजवाल विवाद को नवायनिर्गत हेतु विर्द्धिकरण वांछतीय समझते हैं;

इसलिये, अब, ग्रौथोग्रिह विवाद अविनियम, 1947 की आरा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई अस्तित्वों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनियं एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथेवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राम फेर की सेवाओं का समापन व्यायोचित वया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ०वि०/एफ.डी./ 148-86/38264.—बूकिं हरिवाणा के राज्यपाल द्वारा राय है कि मैं ग्राहनी ग्रेफाइट पा० लि०, तिशंव रोड़, करीदाबाद, के श्रमिक श्री मुख्ली, युव श्री निप्रभुर, मार्हा नहीं दाता० रुपामार ट्रॉफी, 2/7. गारे करोगी, पुराना करीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औच्चेगिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्यात् विवाद को न्यायनिर्गत है तू तिरिंष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए द्वितीयां के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के सथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त॑या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त॑या मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री मुरली की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ०वि०/एफ०डी०/148-86/38271.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरती ग्रेफाईट प्रा० लि०, तिगांव रोड, करोदाबाद के अधिकारी श्री उदयराम, पुत्र श्री विदेशी मार्केट करोदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानने में कोई औद्योगिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

‘इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उत्तरारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राजपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-ज्ञा-अम-57/11245 दिनांक 7 करवारी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अध्यवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री उदय राम को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो० विं०/एक०डी०/143-36/38278.—चूंकि हरिपाण के राज्यपाल की राय है कि मै० आरती ग्रेकाईट प्रा० लि०, तिगांव रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री लहू, पुत्र श्री भगोरवो मार्किंस फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है ।

और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्गत हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीदोगिक विवादश्वितियन, 1947 की धारा 10 को उमधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरिहाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारों श्रविसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रविसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11345, दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उक्त श्रविसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय करीदारवाद को विचारप्रस्त या उसके मुर्मांग या उनके सम्बन्धित नीचे तित्वा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देते हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री लत्तू की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है?